शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

वेणु गोपाल की कविता को पढ़ते हुए

नंदकिशोर प्रसाद
सह –प्रोफेसर
राजधानी कॉलेज (यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली)

हिन्दी साहित्य लेखन परंपरा में खेमेवादी लेखन की अपनी परंपरा रही है । एक विशेष विचारधारा के अंतर्गत लेखन परिपाटी रही है । ऐसे में लीक से हटकर अलग लेखन करने वालों को प्राथमिकता नहीं दी जाती या उसकी लेखन को गैर जरूरी कहकर रचनधर्मिता पर ही सवाल पैदा कर दिया जाता है । वेणुगोपाल ऐसे ही एक कवि है जिन्हें लंबे अरसे तक तरजीह नहीं दिया गया । प्रस्तुत शोध में वेणुगोपाल की रचनधर्मिता और उनकी सामाजिक भागीदारी पर विचार किया गया है ।

हिंदी पट्टी में खेमेवादी की एक लंबी परम्परा रही है।यद्यपि पुराने खेमेबंदी से अब के खेमेबंदी अधिक खतरनाक है और खेमेबंदी से ही उस रचनाकार की कीमत का पता चलता है।जहाँ तक प्रतिबद्धता की बात है तो हम जानते है कि प्रतिबद्धता हमेशा रचनात्मक होती है लेकिन जब एक व्यक्ति किसी विचारधारा या धेरेबन्दी से जुड़ता है तो जुड़ने से पहले गणित का इस्तेमाल करता है। मसलन गुणा, भाग, जोड़ , घटा, लाभ, हानि के माध्यम से वह प्राइवेट स्कूलों के बच्चों की तरह रटंत -पद्धतियां अपनाकर कभी उल्टी करता है तो कभी तारीफ का पूल बांधता है। ऐसे में यह अत्यधिक जटिल हो गया है कि विचारधारा या घेरेबंदी की पहचान करते हुए उस व्यक्ति के पाखंड की पहचान की जाय तब रचना के भीतर घुसा जाय।जबकि सरल तरीका यह है कि रचना को पढ़कर रचनाकार के भीतर और फिर समाज के भीतर घुसा जाय।

बात वेणुगोपाल की है और विषय कविता है।मेरे पास तीन कविता संग्रह 'हवाएँ चुप नहीं रहती' वे हाथ होते है ' चट्टानों का जलगीत ' उपलब्ध है। इन रचनाओं में कवि को अपनी कुछ सफाई, कुछ तर्क व जिज्ञासाएं है। सवाल यह नहीं है कि रचनाकार रचना के प्रति कितना ईमानदार है बल्कि रचना इतिहास के भीतर कितना स्वंय को जोड़ पाती है, कहना ज्यादा उचित होगा। कवि मौत की बात करता है । जबकि मौत विश्व समाज व्यवस्था में सामान्य प्रक्रिया नहीं है। **"मैंने पूरी तैयारी कर ली थी।दरवाजे बंद ।तेज चाकू। बस ,खोलकर सामने फैला देना है । और उस पर गिर पड़ना है ।पेट के बल ।लेकिन पहले ये कविताएं जला देनी है"**

कवि के हिसाब से आत्महत्या करने की बात है। यह शहरी जीवन के संदर्भ में जीवन सफल न होने अर्थात आकांक्षाओं के पूरा न होने या संघर्ष संघर्ष करने की ताकत खत्म हो जाने के बाद की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति गेंग्रीन अवस्था में भी अपनी जीविका के लिए संघर्ष करता है और एक पैर कट जाने के बाद भी जिंदगी जीने का प्रयत्न करता है वह बार-बार आत्महत्या क्यों करना चाहता है।

क्या सामाजिक ,राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक व्यस्थाओं से तंग आ गया है या प्रथमिक जरूरतें पूरा नहीं हो पाने की वजह से । कवि ने लिखा है कि कविता उसे कई बार आत्महत्या करने से रोक दी है। कविता का स्वयं पर आत्मपरीक्षण और तब समय से उसे वितरण कर देना ऐसे में समाज का क्या होगा। क्या कविता पढ़कर आत्म हत्याएं कम हो जाएगी या बढ़ जाएगी। दरअसल कवि का अपना सच समाज का सच तब बनता है जब भावुकता का स्थान बाजार ले लेता है और सामान की तरह जान भी लेनदेन में बदल जाती है अतः कवि अपनी कविता की ताकत से बच जाता है वही कविता आज लोगों के लिए निरर्थक व बेकार की चीज़े रह गई है।

"देखों की जंगल आज भी उतना खूबसूरत है / अपने आशावान हरेपन के साथ बरसात में झूमता हुआ /उस काले भेड़िए के बावजूद/ जो शिकार की टोह में / जो झाड़ियों से निकल कर खुले में आ गया है / ख़रगोशों और चिड़ियों /और पौधों की दूधिया वत्सल निगाहों से/ जंगल को देख भर लेना दरअसल उस काले भेड़िए के ख़िलाफ़/ खड़े हो जाना है जो सिर्फ़ अपने भेड़िए होने की वज़ह से जंगल की ख़ूबसूरती का दावेदार है।" (काले भेड़िये के खिलाफ कविता से)

यह जो भेड़िया है वह समय और स्थान के भीतर परिवेश एवं परिस्थितियों के अंतः क्रियाओं से पैदा हुआ है। दूसरों के लिए पीएच.डी.की उपाधि हेतु शोध प्रबंध लिखने वाले वेणुगोपाल को नौकरी नहीं मिलती जबकि जिसकी पीएच.डी.वे लिखते है उसको नौकरी मिल जाती है।यह अपने समय के सच और आत्महत्या करने का मुख्य कारण है इसलिए कवि सर्वप्रथम मौत के बारे में लिखता है । इसे स्पष्टत देख जा सकता है कि जो दिखता है वह बिकता है, शेष भकु नारायण है। विद्वान लोग लकीर खींच दिये है , इधर फकीर उधर अमीर।

"हवाओं ने सरापा समझा अंधेरे को/ झूठ नहीं कहा था उसे/ लेकिन अंधेरे ने ग़लत समझा हवाओं को/ क्योंकि उजाले को सच कहा था उन्होंने।" (हवाएं चुप नहीं रहती कविता से)

यह वेणुगोपाल के जीवन का सच के साथ आज के समय का भी सच है। मौत के बाद कवि देखने और सुनने की बात करता है । दरअसल यह इतना आसान नहीं है इससे जान भी चली जाती है।कबीर का आंखिन देखी और वेणुगोपाल आखिन देखिन एक जैसा है । वेणुगोपाल देखते है और सुनते है ।"देखना अपने से बाहर जाना है।और अपने से बाहर जाकर अपने को देखना ।कैसा जादू!! कि ऑखें मूँदो तो सारी दुनिया गायब! और खोलते ही सारा तिलिस्म एक बारगी सामने। इसलिए देखना ताकत देता है ।सुनना भी लेकिन उसका नंबर बाद में ।"श्रोत की विविधताओं को देखना और उसे महसूस कर स्वयं को आत्महत्या के करीब पहुँचाना बहुत चिंता और चिंतन की बात है । मसलन विज्ञान व मशीन की दुनिया में आप परिवर्तन कलम से नहीं कर सकते जबकि कवि के पास कलम की ताकत है, ऐसे में अपनी प्रतिक्रियाएं कोरे कागद पर उधेड़ देता है। कवि देखता है अपना बचपन, परिवार, दोस्त,अपने सगाई में आयी चीज़े। एक निश्छल संबंध लेकिन जब वही ध्यान से इस बदलाव को देखता है तो एक बेचैनी ,एक अंधेरा उसके सामने छाने लगती है ।

"देखने के नाम पर मेरे पास सिर्फ़ वह अंधेरा है / जो बढ़ता ही चला जा रहा है लेकिन सुनने के नाम पर ढेर सारी किलकारियाँ हैं/ घुटनों के बल खिसक -खिसक कर आते हुए बच्चे की/ मैं जो कुछ भी देख पा रहा हूँ वह आज है/ लेकिन जो सुन रहा हूँ वह आने वाला कल है।" (देखना और सुनना कविता से)

यह भारतीय समाज व्यवस्था का वह सामंतीय ढांचा है जो आदमी को नक्सल बनाता है। स्थितियों की जकड़न को देखना उसे संघर्ष की ओर प्रेरित करती है और वह अंधेरे में ,जंगलों में अपने जीवन को काटता है।क्योंकि उसने जो सुना है वह अत्यंत मत्त्वपूर्ण है।हर बदलाव मौत मांगती है। आज वह बदलाव के लिए मौत की परवाह नहीं कर रहा क्योंकि कल उसे कुछ सुनना भी है। वेणुगोपाल नक्सल आंदोलन से भी जुड़े हुए थे।नक्सलियों की स्थिति के बारे में उन्हें पता

था लेकिन किस सामाजिक हैसियत के लिए वे लड़ रहे थे वह बहुत कम समय में ही देखने व सुनने को मिल गई। यह कविताएं समय और स्थान के दबाव के कारण पैदा हुई है। कवि पत्थर, पहाड़ ,गुफा, जंगल, बरसात का जो चित्रण करता है वह अनायास नहीं है उसके भीतर कवि मन की पीड़ा है। **" तो यह सन् 1975 है और इन्हें मेरा इंतजार करना चाहिए/और राख के ढेर में ढूंढना चाहिए/ ढूंढते रहना चाहिए/ शोला नहीं तो कोई चिंगारी ही मेरे लौटने तक।"**यह चिंगारी जिसे कवि के तलाश और उम्मीद भी है एक तरह से उनकी प्रगतिशीलता का सूचक है।कवि प्रत्येक कविता से एक लड़ाई के रूप में देखता है ।ऐसा लगता है कि कविता और रोटी की बात एक साथ हो सकती है जबकि आज यह धारणा काफी प्रबल हो चुकी है कि कविता और रोटी का कोई संबंध नहीं है। दरअसल वेणु जी के जीवनशैली और उनके जीवन से संबंधित तमाम विवरणों को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि कविता कवि को साहस देती है और रोटी उन्हें ऊर्जा।दोनों मिलाकर अपना काम करते हैं।इसलिए कविता में जो जीवन है वह किसी खाका विवेक से बाहर एकदम रूटलेस है।उसे हर तरह से देखा-परखा जा रहा है।**"कई-कई दिन हुए एक दाना तक नहीं गया है उनके मुँह में/और / अब यह तय हैकि जंगल से वही निकल पाएगा/ जो दूसरे को काटकर अपनी ख़ुराक हासिल करे /और ताक़त पाए/और भविष्य ही बताएगा कि जंगल से निकलने / और दुश्मन से लड़ने के लिए कौन बचता है – कवि या कविता?"**

कविता के प्रति और कवि के प्रति वेणु जी चिंता अधिक मत्वपूर्ण है।अर्थ की दुनियां में भावुकता की जगह चालाकी ने अपना स्थान बना लिया है,अंतः ह्रदय की सरलता ,सहजता एवं कोमलता की बात करना एक तरह का गदहपन है। इसके स्थान पर भाषा व व्यवहार का तिकड़म मत्त्वपूर्ण हो गया है। हमें यह ध्यान रखना है कि एक मॉल में साड़ी खरीदते समय अगर चार हजार रुपये दे रहे है और उससे अच्छी क्वालिटी हाथ से बनी साड़ियों में है और उसकी कीमत चार हजार रुपए है तो हम श्रम की अपेक्षा चमक और स्थान को अधिक महत्व देते है।यह जो श्रम को समझ पाने की दौड़ आज लोगों में खत्म होता जा रहा है,अत्यंत घातक है ,उसका निवारण जरूरी है। हिंदी पट्टी तो इस मामले में और भी कूप मंडूक है। जोगाड़तंत्र से आप कुछ कर डालिये जिसमें आपका गणिततंत्र छुपा है तो आप अव्वल है और दिनरात मेहनत कर अगर कोई लिखता पढ़ता है लेकिन किसी कारणवश दिख नहीं पाता तो वह फिसड्डी है।वेणु जी कविता को एक दस्तावेज मानते है।जबकि अर्थतंत्र इसे एक तरह से मनोरंजन का माध्यम मानता है। ऐसे में कवि वेणु की जो पीड़ा है वह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। कवि ने एक जगह लिखा है कि

"घरों की पिछवाड़े हमारे नौनिहाल ,सेक्स के क्षेत्र में नए-नए साहसिक प्रयोग करते रहते है/ और/ साथ ही अपने माँ से रामायण और बाप से हनुमान चालीसा भी सुनते रहते है/और आप कह रहे है कि"-

ऐसा लगता है कि वेणुगोपाल संबंधों के बीच उलझे हुए व्यक्ति थे। 'जब भाभी के साथ टाके की बात चली तो शील भंग या यो कहे कि इज्जत जैसे प्रश्न सामने आ गया।भाभी के कहने पर वेणुगोपाल पढ़ने भी जाते है और कविता भी लिखतें है।' (वेणु गोपाल से प्रत्यूष जी की बातचीत का अंश) ऐसे में अफवाह या सत्य जो भी हो उनके एक कवि बनाने में भाभी के संबंधों को नकारा नहीं जा सकता ।वे स्वयं लिखते है कि मुझें भाभी,मां और मौसी ने नया जीवन दिया है। वेणुगोपाल की कविताएं जीवन के आस-पास की कविताएं है। उसमें निचले तबके के प्रति एक सहानुभूति है ।कवि का व्यक्तित्व दुख के साथ परिवेश एवं परिस्थितियों के प्रति एक आक्रोश है।गोपेश्वर गोपेश्वर सिंह ने वेणुगोपाल को याद करते हुए लिखा है कि 'हवाएं चुप नहीं रहती संग्रह में 'सपना मेरा ही है ' शीर्षक एक कविता है। यह आपातकाल में लिखी गई थी , लेकिन आज मैं इसे पढ़ रहा हूँ तो लगता है जैसे वेणु गोपाल ने गैगरिन और कैंसर जैसे अंधेरे से संघर्ष करते हुए यह कविता अभी –अभी लिखी है और लिखते- लिखते हमसे सदा के लिए दूर चले गए है ;

पहली बार ऐसा लग रहा है कि / इस बार लौटना नहीं हो सकेगा/मंजिल पर /उतर जाऊंगा तो बस उतर ही जाऊंगा /इस भीड़ के साथ /और/वह स्टेशन कभी नहीं / देख पाऊँगा जहां / मेरे पिछले सारे सफर शुरू होते थे /और खत्म भी।

मसलन वेणु गोपाल अपने लोगों के अंदर (जिनके लिए वे कविता लिख रहे थे)भय को खत्म करने की बात कर रहे है। भेड़िये के खिलाफ तभी खड़ा हुआ जा सकता है जब उसके घात –प्रतिघात को समझ लिया जाए। कवि सत्ता और जनता को बहुत बारीकी से समझकर जनता के साथ खड़ा होकर सत्ता को चुनौती देता है । " जानता मैं भी हूँ /कि बरसात में भिंगते हुए खुजैले कुत्ते के लिए / हिरावल दस्ता /युधिष्ठिर का रोल कभी नहीं निभाता /कभी नहीं " (इस हालत में भी)

कवि नदी , पहाड़ , पत्थर ,पेड़ –पौधे और उसके साथ रहने वाले लोगों की चिंता करता है। वे अपनी कविता से कुछ हो जाने की बात करते है ,उन्हे लगता है कि जीवन संघर्ष में कविता की भी भूमिका है , इसलिए जहां नदी ,पहाड़ ,जंगल , कन्दरा ,झाड़ी व फूल का जिक्र है वहा कविता की भी जिक्र है ,साथ ही जहां बंदक की बात होती है वहाँ कविता की भी बात होती है। " सफर मे निकेल तो पड़े हो लेकिन याद रखो /कि सफर के लिए जितनी जरूरत पैरों की होती है ,उतनी तैयारी की भी और / उतनी एक मंजिल की भी। "

****

संदर्भ सूची -

1 .अनुभव नहीं तो कोई भी सत्य बकवास है(कवि वेणु गोपाल से मुकेश प्रत्यूष की बातचीत के अंश) संपादन –अरुण कमल (आलोचना पत्रिका-अप्रैल-जून 2008)पृष्ठ-38
2 . कवि वेणुगोपाल को याद करते हुए - विजेंद्र नारायण सिंह (हंस पत्रिका -2008)पृष्ठ-18
3 . वेणुगोपाल का जल्दी और यूं जाना -गोपेश्वर सिंह
(हंस पत्रिका -2008) पृष्ठ-19
4 हवाएं चुप नहीं रहती - वेणुगोपाल /कविता संग्रह ,संभावना प्रकाशन , रेवती कुंज , हापुड़ 1972
5 .वे हाथ होते हैं -वेणुगोपाल /कविता संग्रह 1980
6 .चट्टानों का जलगीत -वेणुगोपाल /कविता संग्रह 1980